कक्षा : दसवीं – जैन सिद्धान्त प्रभाकर–उत्तरार्द्ध (परीक्षा 13 जुलाई, 2025)

समय : 3 घण्टे | उत्तरतालिका | अंक : 100

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(a) मनुष्य भव की दुर्लभता का प्रथम कारण है-
(क) स्थावरकाय में उत्कृष्ट स्थिति (ख) त्रस काय में उत्कृष्ट स्थिति
(ग) देवगति में उत्कृष्ट स्थिति (घ) नरक गति में उत्कृष्ट स्थिति (क)

(b) सुख विपाक सूत्र में अध्ययन हैं-
(क) 8 (ख) 10
(ग) 09 (घ) 07 (ख)

(c) सुबाहु कुमार का जन्म किस नगर में हुआ था-
(क) राजगृह (ख) कौशाम्बी
(ग) हस्तिशीर्ष (घ) पाटलीपुत्र (ग)

(d) सुमुख गाथापति ने किनको आहार दान किया था-
(क) धर्मघोष अणगार (ख) धर्मरूचि अणगार
(ग) आषाढ़ाचार्य (घ) सुदत्त अणगार (घ)

(e) सुबाहु अणगार काल करके किस देवलोक में उत्पन्न हुए-
(क) सौधर्म (ख) विजय
(ग) ईशान (घ) ब्रह्मलोक (क)

(f) उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें अध्ययन में गाथाएँ हैं-
(क) 17 (ख) 27
(ग) 37 (घ) 47 (ग)

(g) तत्त्वार्थ सूत्र के तीसरे अध्याय में मुख्य रूप से किसका वर्णन है-
(क) देवगति के जीवों का (ख) मनुष्यगति के जीवों का
(ग) तिर्यंच गति के जीवों का (घ) नारक जीवों का (घ)

(h) सातवीं नारकी में नरकावास हैं-
(क) 5 (ख) 10
(ग) 1 लाख (घ) 30 लाख (क)

(i) देवों के निकाय हैं-
(क) 8 (ख) 4
(ग) 10 (घ) 12 (ख)

(j) काल का उपकार है-
(क) वर्तना (ख) गति
(ग) स्थिति (घ) मरण (क)

(k) जीव पज्जवा में पाँच स्थावर के अलावे बतलाये हैं-
(क) 93 (ख) 98
(ग) 246 (घ) 375 (घ)

(l) जीव पज्जवा का थोकड़ा लिया गया है-
(क) पन्नवणा सूत्र (ख) दशवैकालिक
(ग) भगवती सूत्र (घ) औपपातिक सूत्र (क)

(m) एक पृथ्वीकाय दूसरे पृथ्वीकाय से अवगाहना की अपेक्षा है-
(क) तुल्य (ख) चतुःस्थानपतित
(ग) त्रिस्थानपतित (घ) षट्स्थानपतित (ख)

(n) प्राकृत भाषा में स्वर होते हैं-

(क)12 (ख) 8

(ग) 10 (घ) 5 (ख)

(o) प्राकृत भाषा में वचन होते हैं-

(क) 1 (ख) 2

(ग) 3 (घ) 8 (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) वनस्पतिकाय में उत्पन्न जीव उत्कृष्टतः अनन्तकाल तक रहता है। (हाँ)

(b) पंचेन्द्रिय काय में गया जीव उत्कृष्टतः 15 भव रहता है। (नहीं)

(c) सुखविपाक सूत्र के दूसरे अध्ययन में सुवासव कुमार का वर्णन है। (नहीं)

(d) महाबल पूर्व भव में नागदेव नाम का गाथापति था। (हाँ)

(e) सुखविपाक में वर्णित महापुरुषों में से 6 महापुरुष मोक्ष में गये। (हाँ)

(f) सुबाहु कुमार ने सुमुख गाथापति के भव में सम्यक्त्व अवस्था में आयुष्य बांधी थी। (नहीं)

(g) मध्यलोक में असंख्यात द्वीप समुद्र हैं। (हाँ)

(h) ज्योतिषी देवों के पीत (तेजो) लेश्या होती है। (हाँ)

(i) ज्योतिषी देव मनुष्य लोक के अन्दर स्थित हैं। (नहीं)

(j) ग्रैवेयकों के पहले तक कल्प है। (हाँ)

(k) पुद्गलों में आदिमान परिणाम होता है। (हाँ)

(l) बौद्ध धर्म शास्त्रों की भाषा अर्द्ध मागधी है। (नहीं)

(m) मनुष्य-मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा एक स्थान पतित है। (नहीं)

(n) मनःपर्यवज्ञानी स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है। (हाँ)

(o) स्थिति की अपेक्षा केवली मनुष्य चतुःस्थानपतित है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिएः- **10x1 = (10)**

(a)	समयं गोयम!	(क) छोड़कर	मा पमायए
(b)	परिजूरइ ते	(ख) पच्छाणुत्तावए	सरीरयं
(c)	अव उज्झिय	(ग) सरीरयं	छोड़कर
(d)	पच्छा	(घ) शान्ति मार्ग को	पच्छाणुत्तावए
(e)	संतिमग्गं	(च) मा पमायए	शान्ति मार्ग को
(f)	रूपिणः	(छ) जीवानाम्	पुद्गलाः
(g)	परस्परोपग्रहो	(ज) अनन्त होती हैं।	जीवानाम्
(h)	उज्जाण	(झ) वर्तमान समय की	बगीचा
(i)	प्रत्येक जीव की पर्याय	(य) बगीचा	अनन्त होती हैं।
(j)	अवगाहना	(र) पुद्गलाः	वर्तमान समय की

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a)	मनुष्य जीवन को पाकर भी मुझे पाना दुर्लभ है।	आर्यत्व
(b)	मुझमें उत्पन्न जीव उत्कृष्ट सात या आठ भव रहता है।	पंचेन्द्रिय काय/ मनुष्य भव
(c)	विश्व के समस्त प्राणियों को मैं चिरकाल में भी दुर्लभ हूँ।	मनुष्य भव
(d)	मैं पूर्व भव में ऋषभदत्त गाथापति था।	सुजात कुमार
(e)	मैं महाचन्द्र कुमार का पुत्र हूँ।	जिनदास
(f)	मैं उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य से युक्त हूँ।	सत्
(g)	मैं एक अजीव द्रव्य हूँ मेरे प्रदेश अनन्त हैं।	आकाश/पुद्गल/ आकाशस्तिकाय
(h)	मैं लोकान्तिक देवों का निवास स्थान हूँ।	ब्रह्मलोक/पाँचवाँ देवलोक

(i) मैं असंख्यात द्वीप-समुद्रों में सबसे छोटा द्वीप हूँ। जम्बूद्वीप

(j) मैं एक नरक हूँ, मेरी उत्कृष्ट स्थिति 33 सागरोपम है। सातवीं नरक/महातम प्रभा/माघवई

(k) मैं एक कारक हूँ, मुझमें प्रथमा विभक्ति होती है। कर्त्ता

(l) मैं क्रिया हूँ, मुझे कर्म की अपेक्षा रहती है। सकर्मक क्रिया

(m) मेरा आशय असंख्यात भाग हीन और असंख्यात भाग अधिक है। एक स्थानपतित

(n) मैं एक नरक हूँ, मेरी स्थिति (जघन्य) दस हजार वर्ष है। प्रथम नरक/यम्मा

(o) मैं पन्नवणा सूत्र के पाँचवें पद का थोकड़ा हूँ। जीव पज्जवा

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) ''समयं गोयम! मा पमायए।'' का हिन्दी में अनुवाद लिखिए।
हे गौतम! समय मात्र भी प्रमाद मत करो।

(b) ''परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।'' इस पंक्ति का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।
तुम्हारा शरीर परिजीर्ण (सर्वथा जीर्ण) हो रहा है, तुम्हारे केश श्वेत हो रहे हैं।

(c) ''परेऽ प्रवीचाराः'' का अर्थ लिखिए।
शेष ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के देव विषय-सेवन से रहित हैं।

(d) जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्त कौनसे हैं ?
अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त, कर्मवाद।

(e) जैन दर्शन में मुक्ति के चार साधन कौन से बतलाये हैं ?
सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक् चारित्र, सम्यक् तप।

(f) ''पा'' धातु वर्तमान काल प्रथम पुरुष के रूप लिखिए।
पाइ पांति

(g) ''अहं पुप्फं पासमि'' इस वाक्य का हिन्दी अनुवाद कीजिए।
मैं पुष्प देखता हूँ।

(h) जघन्य मतिज्ञान वाला मनुष्य, जघन्य मतिज्ञान वाले मनुष्य से किस अपेक्षा से चतुःस्थानपतित है ?
अवगाहना व स्थिति की अपेक्षा।

(i) मनःपर्यवज्ञानी किस अपेक्षा से त्रिस्थानपतित कहा गया है ?
चारित्र की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त तथा उत्कृष्ट देशोन क्रोड पूर्व की होती है। इस कारण से मनःपर्यायज्ञानी को स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित कहा गया है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **9x3 = (27)**

(a) ''लद्धूण वि उत्तमं सूइं सद्दहणा पुणरवि दुल्लहा'' इस गाथांश का अर्थ लिखिए।
उत्तम धर्म-श्रवण रूप श्रुति प्राप्त हो जाने पर भी (उस सद्धर्म-या उस सुने हुए धर्म पर) श्रद्धा होना और भी दुर्लभ है।

(b) ''तिण्णो हुसि अण्णवं महं, किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ'' इस गाथांश का अर्थ लिखिए।
है गौतम! महासागर को तो पार कर गया है, अब तीर (तट) के निकट पहुँचकर फिर क्यों खड़ा है ?

(c) मनुष्यों के जीवन को किस-किस के समान क्षणभंगुर बताया गया है ?
जैसे रात्रिगण के व्यतीत हो जाने पर वृक्ष का पका हुआ पीला पत्ता झड़ जाता है, इसी प्रकार मनुष्य जीवन भी एक दिन समाप्त हो जाता है।
जैसे कुश के अग्रभाग पर टिकी हुई ओस की बूँद बहुत थोड़ी देर ठहरती है, वैसे ही मनुष्य का भी जीवन है।

(d) ''विजयादिषु द्विचरमा'' सूत्र का आशय स्पष्ट कीजिए।
विजयादिक चार विमानों के देव द्विचरम अर्थात् दो बार मनुष्य जन्म लेकर मोक्ष प्राप्त करते हैं।

(e) सातों नरकों की जघन्य स्थिति लिखिए।
प्रथम नारकी में दस हजार वर्ष, दूसरी से सातवीं नरक में क्रमशः 1,3,7,10,17,22 सागरोपम की जघन्य स्थिति है।

(f) आत्मा का स्वरूप संक्षेप में लिखिए।
''अप्पा कत्ता विकत्ता य'' आत्मा स्वयं अपने कर्म का कर्त्ता है और भोक्ता है। कर्म न तो किसी दूसरे के द्वारा निर्माण हुए और न ही वे किसी दूसरे के कर्मों का निर्माण कर सकते हैं। आत्मा स्वयं अच्छे बुरे कर्म करती है, स्वयं ही कृत कर्मों का फल भोगती है, स्वयं ही संसार में परिभ्रमण करती है और स्वयं ही मुक्त होती है। ''अप्पा सो परमप्पा'' आत्मा ही परमात्मा है।

(g) अनेकान्त की परिभाषा लिखिए।
अनेकान्त-अनेक अन्ताः भावाः अर्थाः सामान्य विशेष गुणपर्यायः, यस्य सोऽनेकान्त-अर्थात् जिसमें अनेक अर्थ, भाव, सामान्य-विशेष गुण पर्याय रूप में पाये जायें, वह अनेकान्त है।

(h) नारकी के 93 अलावों को स्पष्ट कीजिए।
नारकी के अवगाहना, स्थिति, वर्णादि 20 बोल तथा 9 उपयोग, इन 31 के जघन्य, उत्कृष्ट, मध्यम की अपेक्षा 31x 3 = 93 अलावा हुए।

(i) त्रिस्थानपतित का आशय स्पष्ट कीजिए।
त्रिस्थानपतित का आशय यहाँ असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन तथा असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक से है।